# कश्मीर शैव दर्शन

एवं

शिव - शक्ति

आपना गुरु मानते थे।

## काश्मीर शैव दर्शन एवं शिव शक्ति:-

वेदों की भान्ति तन्त्र शास्त्र भी भारत में अनादि काल से प्रचलित है। जिन को स्वयं परम शिव ने प्राणिमात्र के कल्याण तथा उनकी आध्यात्मिक, आधि दैविक, आधि भौतिक, बाधाओं को दूर करने के लिए उपदेश रूप में दिया है। यही उपदेश आगे चलकर आम्नाय या आगम कहलाये

प्रथमत: यह आगम छ: थे :- पश्चिमा
१. पूर्वाम्नाय २. दक्षिणाम्नाय ३. उत्तराम्नाय ४ पश्चिमाम्नाय ५. ऊर्ध्वाम्नाय ६. अधराम्नाय जो कालान्तर में परस्पर संयोग से ६४ बने। यही आगम आजकल के सब तन्त्रों के मूलाधार है।

यह तन्त्र जो विभिन्न देवी देवताओं के गुण, रूप, कर्म का वर्णन करते हुए उनके साथ सायुज्य प्राप्त करने के उपायों का भी वर्णन करके, यौगिक प्रक्रियाओं अर्थात प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि द्वारा एकाकार होकर अपने शरीर में छिपे हुए शक्ति केन्द्रों को जगाकर ऋद्धि सिद्धि के साथ शिवोहम का आभास देते हैं। जहाँ फिर साकार, निराकार, ससीम, असीम का भेद मिट जाता है।

अतएव तन्त्रों में "प्रबुद्ध: सर्वदा तिष्ठेत" अर्थात अपने में छिपे शक्ति केन्द्रों के विषय में सदा जागृत रहो, उनका सदुपयोग करो उन्हें मत गंवाओ कहा है।

पूर्व काल में काश्मीर की जनता इस कथन पर पूर्ण रूप से आचरण करती थी। उनकी साधना सिद्धि सारे भारत में प्रसिद्ध थी जिसके कारण वे काश्मीर को अपना गुरु मानते थे।

धीरे धीरे समय ने पलटा खाया। ज्ञान और आध्यात्मिकता का स्थान कर्मकाण्ड के प्रदर्शन ने ले लिया परिणाम यह हुआ कि तत्व बौध का ह्रास होगया। इस कठिन परिस्थिति में ऐसे तत्वनिष्ठ सुयोग्य विद्वान् की आवश्यकता थी जो तत्कालीन वैदिक, बौद्ध एवं तान्त्रिक परम्पराओं का सामंजस्य करता हुआ अद्वैत भावनाओं का सृजन करे।

दैवयोग से कश्मीर में आठवीं शताब्दी में वसुगुप्त का जन्म हुआ। उन्होंने स्वयं शिव के कहे हुए शिव सूत्रों के आधार पर एक नये अद्वैत शैव सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जो कश्मीर की एक नई देन थी। जिसके मूल सिद्धान्त ज्ञान, योग, क्रिया, और कर्म हैं जिनके आध्यात्मिक प्रयोग के द्वारा साधक तत्वबोध पाकर शिवोऽहम् का अनुभव पाता है। आगे चलकर आचार्य कल्लट भट्ट ने इसे संवारा और नया रूप दिया। जिसे फिर सोमानन्द ने दार्शनिकता प्रदान कर एक अद्वैत दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया। जिनके मूलभूत सिद्धान्त आगम, स्पन्द, प्रत्यभिज्ञा पर स्थिर हैं। अतः पूर्वोक्त तीन पर स्थिर होने के कारण इस दर्शन का नाम त्रिक दर्शन या त्रिक शास्त्र पड़ा

इन मन्त्र शास्त्रों का ज्ञान लोक कल्याण के लिए स्वयं परम शिव ने दुर्वासा को दिया है फिर परम शिव भक्त दुर्वासा जी ने इनका ज्ञान अपने मानस पुत्रों को दिया। जिन्होंने आगे चलकर अपनी शिष्य परम्परा को दिया।

इस दर्शन के प्रमुख आचार्यों के अतिरिक्त कश्मीर के आचार्यों में वसुगुप्त, सोमानन्द

वसुगुप्त ने स्पन्द कारिका, सोमानन्द ने शिवदृष्टि अभिनव गुप्त ने प्रत्यभिज्ञा लिख कर इस मत को लोकप्रिय बनाया जिस के कारण सारा कश्मीर इस मत का अनुयायी होगया।

इस मत में बाह्य साधनाओं के साथ २ यौगिक प्रक्रियाओं से मन की वृत्तियों पर पूर्ण नियन्त्रण कर अन्तर्मुखी अद्वैत साधना को अपनाने में विशेष बल दिया है। जिससे साधक को तत्व ज्ञान के साथ २ शिवोऽहम् का भी आभास मिलता है। यही आत्म आत्म आमर्श आत्म बोध की सच्ची उपलब्धि है।

शैवागमों की उपलब्धियां :-

कश्मीर के शैव शास्त्रों के चार काण्ड हैं। जिनको एक साधक को नियमित रूप से अपनाना पड़ता है। वे हैं :- ज्ञान, योग, क्रिया, चार्य। ये चार अपने लक्ष्य के अनुसार आत्म चिन्तन की विधियां सिखाते हैं। जिन से हमारे शरीरगत शक्ति केन्द्र जागृत हो जाते हैं। जिनको शैव शास्त्रों में शाम्भवोपाय, शाक्तोपाय, तथा आनवोपाय कहते हैं। इनके युक्ति-युक्त प्रयोग से साधक आत्म जागरण की ओर अग्रसर हो सकते हैं। साथ ही दुर्लभ सिद्धियाँ भी प्राप्त कर सकते हैं।

संक्षिप्त रूप में काश्मीरिक शैवदर्शन हमें साधना, ज्ञान, योग, तथा अद्वैत दार्शनिकता सिखाता है। जो अन्य दर्शनों में एकत्र नहीं मिलते हैं।

परम शिव तथा उसके दो रूप शिव शक्ति :-

कश्मीर शैव दर्शन में शिव की दो अवस्थायें मानी जाती हैं (1) अन्तर्मुखावस्था (2) बहिर्मुखावस्था। अन्तर्मुखावस्था में शिव को निर्विकल्प

जब उसको "बहुस्यां प्रजायेयम" अर्थात् मैं स्वयं अनुरूप बनूं। ऐसी इच्छा शक्ति का प्रादुर्भाव होता है यही उसकी बहिर्मुखावस्था है जो शक्ति रूपा है। जिसं से सृष्टि, स्थिति, संहार की प्रक्रिया होती है। अर्थात् काश्मीरिक शैव दर्शन के अनुसार जब परम शिव के हृदय में सृजनात्मक इच्छा शक्ति उत्पन्न होती है तो वह सविकल्प होता है। अन्यथा वह निर्विकल्प है अतः उसके दो रूप माने जाते हैं (1) शिव रूप (2) शक्ति रूप।

निर्विकल्प अवस्था में वह प्रकाश स्वरूप है। और सविकल्प रूप में विमर्श रूप है। जिसे चित शक्ति कहते हैं। यही विमर्श रूपी चित शक्ति ही सारे विश्व प्रपंच की निर्मात्री है जो उसे प्रकाश का आभास देती है। इसी आधार पर शक्ति तन्त्रकारों ने सिद्ध किया है। "एकं सर्वकुल रूप महेश्वरः" जो कुछ भी

X अ क → ई → सू

संसार में स्थूल सूक्ष्म रूप में भासमान है वह सब शक्ति स्वरूप है क्योंकि शिव की विमर्श शक्ति से ही स्थूल सूक्ष्म जगत का उद्भव हुआ है, जो चित शक्ति स्वरूपा है। अतः प्रकाश विमर्श का सामंजस्य उन्होंने अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शाया है। जहां शिव शक्ति अंगागिभाव में एक हैं भिन्न नहीं। इस पर शास्त्र प्रमाण इस प्रकार है— "न शिवः शक्ति रहितो न शक्ति व्यतिरेकिणी" न शिव शक्ति से पृथक है न शक्ति ही शिव से भिन्न है। अपितु

अंगांगि भाव में एक है। शैव तथा शाक्त दर्शन छत्तीस तत्वमय जगत को परम शिव की चित् शक्ति का उल्लास मानते है जो विमर्श स्वरूप है। इससे सिद्ध होता है कि परम शिव की स्वतन्त्रता शक्ति सत्य है, नित्य है जिससे शाक्त दर्शन में पराशक्ति कहा गया है! क्षेमराज ने प्रत्यभिज्ञा हृदय के पहले सूत्र में इसकी पुष्टि की है।

"चिति: स्वतन्त्रा विश्व सिद्धि हेतु:"

विश्व का एक मात्र कारण चित् शक्ति है परन्तु जहाँ शिव शक्ति एक रस होकर एक है वही साम्यावस्था तत्वातीत अवस्था है। इस परम तत्व को शैव परम शिव, और शाक्त परा शक्ति कहते हैं। भिन्न रुचि के कारण लोग रुचि भेद से इसी परम तत्व को पुरुष भाव या स्त्री भाव से जानते हैं। अत: हमारे आचार्यों ने दोनों का सामंजस्य दिखाकर गौरी शंकर, लक्ष्मी-नारायण, राधे श्याम, सीता राम आदि प्रकृति पुरुष रूप में मान लिया है। वस्तुत: सच्चिदानन्द परमात्मा न स्त्री है न ही पुरुष अपितु उनका अभेदात्मक सामरस्य है जो स्वत: प्रकाश होने के कारण सौन्दर्य युक्त है। अनुपम है, अवर्णनीय है, सच्चिदानन्द स्वरूप है।

सामंजस्य

## शिव शक्त्यात्मक श्रीमन्त्र – श्रीयन्त्र

इसी सामंजस्य की साधना हमारे तन्त्रकारो ने श्रीमन्त्र तथा श्रीयन्त्र साधना से प्रवर्तित किया है। जिन के द्वारा उन्होने अद्भुत सिद्धियां प्राप्त की है जो अन्य साधनों द्वारा अप्राप्य है। अप्राप्य है

मन्त्र: मन्त्र एक ऐसा सूक्ष्म प्रयोग है जिसका मनन पूर्वक जप करने से हर प्रकार की विघ्न बाधायें दूर होजाती हैं तथा सब प्रकार की अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं। यह मन्त्र कुछ अक्षरात्मक ध्वनियां होती हैं जिनको बीजाक्षर कहते हैं। जो गुरु से लिये जाते हैं। जिस प्रकार बीज मे वे सब तत्व विद्यमान होते हैं जो उस वृक्ष मे होते हैं, पर दिखाई नही देते हैं, फिर अनुकूल वातावरण प्राप्त होने पर वे वृक्ष रूप मे पनप जाते हैं और पत्र पुष्प फल प्रदान करते हैं। इसी प्रकार मन्त्र बीज भी भावना के जल से सिक्त होकर गुरु कृपा के वातावरण में पल्लवित पुष्पित तथा फलित होकर अभीष्ट सिद्धि देते हैं। क्योंकि वे साक्षात् देवता स्वरूप होते हैं। तन्त्रोक्ति है "मन्त्र मयो हि देवाः" मन्त्र साक्षात् देवता स्वरूप है। देवता स्वरूप होने के कारण इन बीजाक्षरों मे गुप्त शक्ति होती है। जो दिखाई नही देती है पर अनुभव की जाती है। यह बीजाक्षर तन्त्रों मे अनेक है जो भिन्न भिन्न देवी देवताओं से सम्बन्ध रखते है।

यन्त्र: इसी प्रकार जैसे ऋषि मुनियों ने मनन ज्ञान रूप में ध्वनि बीजों में मन्त्रों का अनुभव किया उसी प्रकार उन्होंने कालान्तर में रेखात्मक आकृतियों का (अक्षरात्मक) अंकात्मक अंकों का अनुभव किया जो बीजाक्षरात्मक रेखात्मक, अथवा बीज संख्यात्मक, किसी देवी देवता के साक्षात् स्वरूप होते हैं। इन्हें तन्त्रशास्त्रों में यन्त्र कहा जाता है। इन्हें तन्त्रोक्त विधि विधान से पूजा जाता है या धारण किया जाता है। अथवा प्राण प्रतिष्ठा करके इन्हें देवी या देवता समझकर पूजने से यह अवश्य अभीष्ट फल देते हैं।

जिस प्रकार मन्त्र और देवता में अभेद होता है इसी प्रकार यन्त्र और देवता में भी अभेद होता है। अतः यन्त्र को भी साक्षात् देवता ही समझना चाहिए। ऐसा शास्त्रों का आदेश है। इनकी पूजा का फल वही होता है जो किसी देव मूर्ति पूजन का होता है। अतः भावना से इनकी यदि पूजा अर्चा होगी तो यह अवश्य अभीष्ट सिद्धिदायक होते हैं!

शिव शक्तिमय श्रीमन्त्र की उपासना का महत्व

जहाँ तन्त्र शास्त्रों में देवी देवताओं की उपासना विधियां तथा पूजा अर्चायें वर्णित हैं वहाँ उन्होंने श्रीयन्त्रान्तर्गत श्री महात्रिपुर सुन्दरी ललिता की उपासना को सबसे बड़ा महत्व देकर सर्वोपरि माना है। क्योंकि यह उपासना एकांगी नहीं, अपितु शिवशक्तिमयी है। इसमे शिवशक्ति को एक माना गया है भिन्न भिन्न नहीं। अतः जहाँ

शिव है वहाँ शक्ति भी है। जो अंगांगिभाव में एक है। जो तन्त्र शास्त्रों में शिव शक्ति स्वरूप है अर्धनारीश्वर माना गया है।

इस अर्धनारीश्वर का कौन सा भाग पुरुष (शिवमय) है और कौनसा स्त्री (शक्तिमय) है। इस का वर्णन देवी भागवत के निम्नलिखित श्लोक में हुआ है।—"

"स्त्री रूपो वामभागांशो दक्षिणांशः पुमान् स्मृतः"

परम स्वतन्त्र शिवने अपनी स्वतन्त्र शक्ति से दो रूप धारण किये। वे वाम भाग में स्त्री और दक्षिण भाग में पुरुष बने। जो परम शिव का अर्धनारीश्वर शिवशक्तिमय स्वरूप है।

श्रीयन्त्रात्मक उपासना :—

श्रीयन्त्रात्मक उपासना तन्त्र शास्त्रों में तीन प्रकार की मानी गई है।

(१) यन्त्रात्मक या देवमूर्ति स्वरूप (२) मन्त्रात्मक (३) पररूप। इन तीनों को स्थूल, सूक्ष्म, पररूप अथवा कायिक, वाचिक, मानसिक उपासना भी कह सकते हैं।

यन्त्रात्मक या देवमूर्ति स्वरूप :

यन्त्रात्मक या देवमूर्ति स्वरूप उपासना स्थूल या कायिक पूजा मानी जाती है जो उस अदृश्य अगोचर/निर्गुण परब्रह्म की पूजा यन्त्र या देवमूर्ति को ही साक्षात् तद्रूप समझकर की जाती है।

मन्त्रात्मक उपासना :— मन्त्रात्मक उपासना का सम्बन्ध मानसिक जप, भक्ति युक्त मानसिक ~~सूक्ष्म~~ या तल्लीन कीर्तन से है जो सूक्ष्म उपासना है।

परारूप उपासना :- पूर्ण निष्ठा से अन्तःकरण में शिवोऽहम् का भाव रखकर हर श्वासोच्छ्वास में हंसः को अन्तर्मुख होकर जप करना परारूप उपासना है। यही लय योग है।

मन्त्रों में शिवशक्तिमयी श्रीविद्यात्मक मन्त्र उपासना का महत्व :- मन्त्रात्मक उपासना में शैव शाक्त तन्त्रों में श्रीविद्यात्मक मन्त्र सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं। जिनमें बालात्रिपुर सुन्दरी पंचदशाक्षरी, षोडशाक्षरी, महाषोडशाक्षरी को मन्त्रराज की उपाधि दी गई है। इनमें से किसी भी एक मन्त्र की उपासना से न केवल धर्म अर्थ काम की प्राप्ति होती है अपितु दुर्लभ मोक्ष की भी प्राप्ति होती है। जो अन्य मन्त्र उपासना में दुर्लभ है। जैसे वेदों का सार गायत्री मन्त्र प्रत्यक्ष रूप में चतुर्वर्गप्रद है, इसी तरह मन्त्रों में उसका परम गोपनीय मन्त्र श्रीविद्या मन्त्र है। इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं शिव हैं जिन्होंने मानव मात्र के कल्याण के लिए यह विद्या जिन भक्तों को दी है उनके नाम यह हैं:- मनु, चन्द्र, कुबेर, मन्मथ, अग्नि सूर्य, इन्द्र, स्कन्द, अगस्त्य, दुर्वासा, लोपामुद्रा इस विद्या के मुख्य तीन सम्प्रदाय प्रसिद्ध हैं।
(१) कादिविद्या (२) हादि विद्या (३) सादिविद्या

कादिविद्या:- जिस पन्द्रह (15) ककारादि बीज अक्षरात्मक मन्त्र से घोर तप करके कामदेव ने श्रीविद्या को संतुष्ट करके परम दुर्लभ सिद्धियाँ पाई वह कादिविद्या कहलाई।

नोट: (मन्त्र रहस्य है। वह गुरुमुख से लेना चाहिए)

हादि विद्या :- जिस हकारादि बीजाक्षरात्मक मन्त्र से लोपामुद्रा ने घोर तपस्या करके अद्भुत सिद्धियें पाई वह हादिविद्या कहलाई।

सादि विद्या :- जिस सकारादि बीजाक्षर मन्त्र से दुर्वासा ने शिव सायुज्य पाया वह सादिविद्या कहलाई। इस विद्या के अनेक आचार्य हुए जिनमें दत्तात्रेय, अगस्त्य, तथा परशुराम प्रसिद्ध हैं। दत्तात्रेय ने दत्तसंहिता, अगस्त्य ने शक्ति सूत्र तथा परशुराम ने परशुराम कल्पसूत्र लिखे हैं। यह तीनों ग्रन्थ श्रीविद्या के विषय में बहुत ही उपयोगी हैं। इन तीनों विद्याओं के देवता उपासना, क्रम, मन्त्र कूट क्रम, योग क्रम, ओंकाराक्षर क्रम, कूट क्रम नीचे दिया जाता है:-

| | उपासना क्रम | मंत्र कूट क्रम | योग क्रम | ओं अक्षर क्रम | कूट क्रम |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | काली | कादि | कुण्डलिनी क्रम | अ | वाग्भवकूट |
| २ | सुन्दरी | हादि | हंस क्रम | उ | कामराज कूट |
| ३ | तारिणी | सादि | सावरोध क्रम | म् | शक्ति कूट |

कादि मन्त्र में उपासक महाशक्ति की उपासना कालीरूप में करते हैं, अर्थात् उनकी उपास्य देवी काली है। काली उपासक सारा हिन्दू बंगाल है। श्री रामकृष्ण परमहंस की भी यही आराध्य देवी थी। वे भी कादि उपासक थे।

हादि मन्त्र में उपासक महाशक्ति की उपासना त्रिपुर सुन्दरी-ललिता के रूप में करते हैं। अर्थात् उसकी इष्टदेवी त्रिपुरसुन्दरी-ललिता है। कश्मीर के सारे हिन्दू हादि उपासक हैं। श्री साहिब कौल की भी यही आराध्य देवी थीं वे इसे चक्रेश्वरी के प्रिय नाम से पूजते थे।

सादि मन्त्र में उपासक महाशक्ति की उपासना तारा रूप में करते हैं, अर्थात उनकी आराध्य देवी तारा है। कुछ हिन्दू समाज तथा तिब्बत के बौद्ध इसके उपासक हैं।

इसी प्रकार योगक्रम से योगीजन कादि में कुण्डलिनी जागरण के साथ साथ षट्चक्रों का भेदन करते हुए इसकी उपासना से अन्तर्मुख होकर सहस्रार में सोऽहम् का आभास पाते हैं।

हादि में साधक आत्मा और परमात्मा की सीमितता को लांघकर उसकी असीमता में एकाकार होजाता है, अर्थात् शिवोऽहम का आभास पाता है।

सादि में साधक अन्तर्मुखी साधना से समाधि में लीन होकर अपने को तद्रूप अनुभव करता है अर्थात इन तीनों क्रियाओं क्रमों में योगीजन कुण्डलिनी जागरणात्मक साधनाओं से अन्तर्मुख होकर आत्मजागरणात्मक लक्ष्य को प्राप्त करके सोऽहम् का आभास पाते हैं। इस विषय की प्रमाणिकता पर यतिदण्डैश्वर्य विधान में निम्नलिखित उल्लेख है:—

समारव्याता

"कादि काली समाख्याता हादि श्री सुन्दरी मता।
सादि च तारिणी प्रोक्ता क्रमद्वै स्तत्व दर्शिभिः"
"कादि कुण्डलिनी प्रोक्ता हादि हंस क्रम: स्मृत:
सादि च सर्वदा निद्रः सावरोध्य क्रम: प्रकृत:"

शिवशक्तिमय श्री यन्त्र अथवा श्रीचक्र:-

तन्त्र शास्त्रों में "श्रीचक्रं शिवयोर्वपु:" श्रीचक्र शिवशक्ति का साक्षात् स्वरूप है। शिवशक्तिमय होने के कारण इसकी उपासना मे महत्वपूर्ण स्थान है। अत: शिवशक्ति का प्रतीक मानकर इसकी उपासना करते है और इष्ट कामनाए प्राप्त करते हैं। श्रीचक्र में नौ चक्र है। जिनके नाम है:-
बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अन्तर्दशार, बहिर्दशार, चतुर्दशार, अष्टदल, षोडशदल, वृत्तत्रय, भूपुर। वैसे तो श्रीचक्र "नवचक्रैश्च संसिद्धम्" नौ चक्रों वाला माना गया है, परन्तु वृत्तत्रय के साथ इसमे दस चक्र है जिनमे कुछ आचार्य बिन्दु चक्र को शिवशक्ति का प्रधान पीठ मानकर त्रिकोण से गणना करते हैं। कुछ आचार्य वृत्तत्रय की तीन रेखाओं को सूर्य, चन्द्र, अग्निमय श्रीमाता के नेत्र त्रय मानकर इसे चक्रों मे गणना नही करते, इस प्रकार इनकी गणना नौ ही मानी जाती है।

महाशक्ति को विश्वविग्रहा अर्थात् विश्वमय होने के कारण जिस प्रकार श्रीचक्र के नौ चक्रों के प्रत्येक त्रिकोण या दल में विभिन्न देवियों या देवों का निवास है। उसी प्रकार विश्वगत तत्वों का भी इसमें समावेश है। अत: जो कुछ भी संपूर्ण ब्रम्हाण्ड में विद्यमान है वह— P-14

शिव शक्ति मय होने के कारण श्रीचक्र के अन्तर्गत है। इसमे कोई सन्देह नही ऐसा तन्त्रकारों का मत है।

[illegible]

श्रीचक्र के [illegible] विषय :— [illegible]

| | चक्र संकेत | चक्र क्रम: | योगिनी - देवता | चक्रावरण देवी नाम |
|---|---|---|---|---|
| 1 | बैन्दव चक्र | सर्वानन्द मय " | परापर रहस्य योगिनी | महा त्रिपुर सुन्दरी |
| 2 | त्रिकोण " | सर्वार्थ सिद्धि प्रद " | अतिरहस्य " | त्रिपुराम्बा |
| 3 | अष्टकोण " | सर्व रोग हर " | रहस्य योगिनी | त्रिपुरा सिद्धा |
| 4 | अन्तर्दशार " | सर्व रक्षाकर " | निगर्भ योगिनी | त्रिपुर मालिनी |
| 5 | बहिर्दशार " | सर्वार्थ साधक " | कुलोत्तीर्ण " | त्रिपुरा श्री |
| 6 | चतुर्दशार " | सर्व सौभाग्य दायक | सम्प्रदाय " | त्रिपुरवासिनी |
| 7 | अष्टदल " | सर्व संक्षोभण " | गुप्ततर " | त्रिपुर सुन्दरी |
| 8 | षोडशदल वृत्त चक्र | सर्वाशा परिपूरक " सर्वसंक्षोभिणी | गुप्त योगिनी " गर्भिता " | त्रिपुरेश्वरी त्रिपुरेशिनी |
| 9 | भूपुर | त्रैलोक्य मोहन " | प्रकट योगिनी | त्रिपुरा |

क्योंकि "श्रीचक्रं शिवयो वपु:" श्रीचक्र शिव-शक्ति का स्वरूप है। इस तन्त्रोक्ति अनुसार इस के नौ चक्र भी शिवशक्तिमय है। जिनको दो भागों मे विभाजित किया गया है।

(१) शिव चक्र (२) शक्ति चक्र।

शिव संबन्धित चक्र शिव चक्र कहलाते हैं तथा शक्ति सम्बन्धित चक्र शक्ति चक्र कहलाते हैं।

शिव चक्रों का स्वरूप ऊर्ध्वमुख त्रिकोण होता है, जैसे "△"। शक्ति चक्रों का स्वरूप अधोमुख त्रिकोण होता है, जैसे "▽"।

शिव चक्र चार हैं: १. बिन्दु २. अष्टदल ३. षोडशदल ४. भूपुर। शक्ति चक्र पाँच हैं :- १. त्रिकोण २. अष्टकोण ३ बहिर्दशार ४ अन्तर्दशार ५. चतुर्दशार

जिस प्रकार शिवशक्ति में अविनाभाव सम्बन्ध है उसी प्रकार चार शिवचक्रों तथा पांच शक्ति चक्रों का अंगांगिभाव सम्बन्ध है। शिवशक्तिमय होने के कारण दोनों पृथक् पृथक् नहीं रह सकते हैं क्योंकि इन के पृथक् भाव नहीं है सर्वदा ऐक्य है; अतः बिन्दु और त्रिकोण का, अष्टकोण एवं अष्टदल का, षोडशदल एवं दो दशारों का, भूपुर तथा चतुर्दशार, का नित्य सम्बन्ध है।

श्रीविद्या के शिव और शक्ति के मन्त्राक्षर :–
जिस प्रकार शिव एवं शक्ति चक्रों में आपस में अविनाभाव संबन्ध है। इसी प्रकार श्रीविद्या के मन्त्राक्षरों में भी शिवशक्तिमय होने के कारण आपस में नित्य संबन्ध है। वे भी शैव एवं शाक्त दो भागों में विभाजित है। तीन ककार, दो हकार, शैवभाग में आते हैं; शेष मन्त्राक्षर शक्ति भाग में आते हैं परन्तु ह्रीं दोनों भागों में प्रतिनिधित्व करता है।

श्रीचक्र का महत्व एवं स्वरूप :– श्रीविद्या के अन्तर्गत श्रीचक्र या श्रीयन्त्र का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। तन्त्रशास्त्रों में इसके दर्शनमात्र का अनन्तफल वर्णित है फिर पूजा अर्चा का क्या कहना! तन्त्रोक्ति है :–

"सम्यक् शत क्रतून् कृत्वा यत्फलं समवाप्नुयात्
तत्फलं समवाप्नोति कृत्वा श्रीचक्र दर्शनम्!"

विधिपूर्वक सैकड़ो यज्ञों के करने से जो फल प्राप्त होता है, वही फल केवल श्रीचक्र के दर्शनमात्र से प्राप्त होता है। इसी प्रकार श्रीचक्र या श्रीयन्त्र की पूजा का भी अनन्त फल वर्णित है।—

नैजन स्यैते   सहस्राणि   पेय   लक्षांशोनापि

"अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च,
ललिता पूजनस्यैते लक्षांशेनापि न समाः।"

यदि कोई हजारों अश्वमेध और सैकड़ों वाजपेय यज्ञ भी क्यों न करे तथापि श्रीचक्र ललिता पूजन के सामने लक्षांश से भी तुच्छ है। क्योंकि यज्ञों से स्वर्गादि सुख मिलते हैं परन्तु ललिता पूजन इहलौकिक पारलौकिक मोक्ष भी देने वाली है। अतः सर्व श्रेष्ठ है

इसी प्रकार श्रीचक्र चरणामृत पान की महिमा का भी वर्णन है :- "तीर्थ स्नान सहस्र कोटि फलदं। श्रीचक्र पादोदकम्।"

हजारों तीर्थ स्नान करने से जो फल मिलता है वह केवल नित्य श्रीचक्र के चरणामृत पान से होता है। अतः श्रीचक्र का दर्शन ही शिवशक्ति का दर्शन है। श्रीचक्र पूजन ही शिव शक्ति पूजन है। श्रीचक्र चरणामृत ही सर्व तीर्थमय है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

<u>श्री चक्र का नव चक्रात्मक विन्यास :-</u>

१ <u>बिन्दु</u> :- पहले ही कहा गया है कि श्रीचक्र में नौ चक्र होते हैं। जिनका उद्भव बीज रूप में प्रकाश स्वरूप बिन्दु से हुआ है। अतः बिन्दु चक्र शिवशक्तिमय होने के कारण इन नौ चक्रों में विशिष्ट स्थान रखता है। और इसी केन्द्र चक्र में त्रिजगत की उत्पत्ति, स्थिति, संहार कारिणी ज्योति स्वरूपा कामेश्वरांक निलया कामेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी विराजमान हैं। जिनका वर्ण श्वेत रक्त है।

२ <u>त्रिकोण</u> : इसी प्रकाशमय बिन्दु से विमर्श स्वरूप और दो बिन्दु उत्पन्न होते हैं। जो वास्तव में प्रकाश ही हैं। इन्हीं उपर्युक्त तीन

बिन्दुओं से : त्रिरेखात्मक योनिचक्र बनता
है जो श्री चक्र का मूलाधार बिन्दु है। शक्ति
का रहस्य इसी त्रिकोणात्मक योनिचक्र में है।
जिसमे बिन्दुरूप शिवशक्ति, इच्छा ज्ञान, क्रियात्मक
शक्ति से सारे ब्रह्माण्ड का स्फुरण करते हैं।
जिसका साक्षात् सम्बन्ध कामेश्वरी, वज्रेश्वरी,
भगमालिनी से है। सत्व, रज, तमः प्रधान होने
के कारण इन तीन का रंग श्वेत-पीत, लाल
हरा है। श्वेत-पीत कामेश्वरी का द्योतक है। जो
सत्व प्रधान है, लाल वज्रेश्वरी का द्योतक है
जो रजः प्रधान है, और हरित या श्याम भग-
मालिनी का द्योतक है, जो तमः प्रधान है।
इन तीन बिन्दुओं मे पहला बिन्दु पूर्णाहन्ता
अहं स्वरूप पराशक्ति की अक्षर मूर्ति है जिसमे
अ से ह तक सारी वर्णमाला अन्तर्गत है।
दूसरा बिन्दु प्रकाश स्वरूप साक्षात् शिव है।
तीसरा बिन्दु विमर्श रूपिणी साक्षात् शक्ति है।
यही तीन बिन्दु त्रिकोण रूप में परिणत होकर
क्रमशः पूर्णाहन्ता परम शिव तथा जडाजड विश्व के
परिचायक हैं। यही तीन बिन्दु प्रमाता, प्रमेय,
प्रमाण, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, इच्छा, ज्ञान, क्रिया
मन बुद्धि, अहंकार इन त्रिपुटी के सूचक हैं।
मूलरूप मे इनका बीज त्रिकोण है। पर इन तीनों
की साम्यावस्था मिश्र बिन्दु में पाई जाती है
जो श्वेत-रक्त प्रकाश विमर्श स्वरूप शिवशक्ति है

3 अष्टकोण:- त्रिकोण के तेजः प्रसार से अष्टकोण
रूप मे पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी, शक्ति का
प्रादुर्भाव हुआ जो सर्वशास्त्रमयी होकर वैखरी
रूप में उल्लसित होकर अष्टमातृका होकर अष्टसिद्धि
प्रदा है। अष्टमातृका P-17

शान्त

स्फुलिंगिनी

४ अन्तर्दशार :- अष्टकोण के प्रतिबिम्ब से दो दशकोण चक्र उत्पन्न हुये हैं पहला दशकोण चक्र दशमहाविद्यात्मक होने के साथ साथ जाठराग्नि स्वरूप दस वह्नि कलाओं का भी संस्थान है जो दस प्रकार के रस पचाती है जिनको धर्मप्रदा वह्निकलायें कहते हैं। उनके नाम हैं :- धूम्रार्चि, ऊष्मा, ज्वलिनी ज्वालिनी, विस्फुलिंगिनी, सुश्री, स्वरूपा, कपिला, हविर्वहा, कविवहा।

५. बहिर्दशार :- दूसरे बहिर्दशार में चित विमर्श स्वरूप प्राणिमात्र के जीवनाधार दस प्राण-वायु है। जिनके नाम हैं:- प्राण, अपान, समान उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त, धनंजय, जो पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों को चेतना प्रदान करते हैं।

६. चतुर्दशार : दो दशार चक्रों के प्रतिबिम्ब से चतुर्दशार का प्रादुर्भाव हुआ है। जिसमें चौदह भुवनों में व्याप्त मन, बुद्धि, अहंकार, चेतना, चैतन्य, उच्छ्वास, निच्छ्वास, इच्छा ज्ञान, क्रिया, परा, लय, शून्य, तत्व, सूक्ष्म रूप में व्याप्त है।

७ अष्टदल :- चतुर्दशार के प्रतिबिम्ब से अष्टदल का प्रादुर्भाव हुआ है। जिसमें अव्यक्त तत्व महत्तत्व, अहंकार तत्व, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध का सूक्ष्मभाव में समावेश है।

८, षोडशदल :- अष्टदल के प्रतिबिम्ब से षोडशदल का प्रादुर्भाव हुआ है। यह

चक्र कामाकर्षिण्यादि सोलह मनोवृत्तियों का उद्भाव स्थूल है जो प्रत्येक जीवमात्र में स्थायीभाव में पाई जाती है।

वृत्तत्रय: षोडशदल के प्रतिबिम्ब से सूर्य चन्द्र, अग्निमय, त्रिवृत्तात्मक गोलाकार त्रिरेखायें जो महाशक्ति के नेत्रत्रय है त्रिवृत्त रूप में प्रादुर्भूत हुए है। जिनसे दिन रात तथा दो सन्ध्याओं के साथ कालचक्र नियमित रूप से चलता रहता है। जो पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी से सम्बन्धित है। इनका ज्ञान प्रकाश जब आगे बढ़ता है।

भूपुर :- गुरु मण्डलात्मक रूप में प्रस्फुटित हुआ है। जो श्रीचक्र का अभिन्न अंग हुआ है। इस चक्र में देवी देवताओं के अतिरिक्त आद्य गुरुओं तथा मानव शरीरगत तत्वों जैसे ओज, रस, असृक, मांस, मेधा, अस्थि, वसा, स्नायु, मज्जा, शुक्र, रोम, जो जीवनमात्र की शारीरिक बनावट में सहायक है, स्थित है।

श्रीचक्र में अक्षरों का क्रम :-

अन्य विभूतियों की भान्ति श्रीचक्र के नौ चक्रों में सारी वर्णमाला ओत-प्रोत है जो त्रिकोण चक्र को पहले परा के रूप में वर्णित है। इनका स्थान क्रम इस प्रकार है :-

बिन्दु :- ॐ

त्रिकोण :- वाग्भव बीज- ऐं

कामराज बीज :- क्लीं, शक्ति बीज- सौं

अष्टार :- पँ, फँ, बँ, भँ, मँ, शँ, यँ, सँ,

अन्तर्दशार :- तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ

इस कुण्डलिनी शक्ति को तान्त्रिकों ने दो भागों मे विभक्त किया है :-
(१) परा (२) अपरा ।
परा को अकुल कुण्डलिनी और अपरा को उन्होंने कुल कुण्डलिनी नामों से संबोधित किया है। अकुल कुण्डलिनी परानन्दा स्वरूपा होकर भी विश्वोतीर्ण है। परन्तु इसके विपरीत कुल कुण्डलिनी साक्षात विश्वमय है।
तन्त्रोक्त है "कुलं हि परमा शक्तिः"
क्योंकि कुल कुण्डलिनी रूप मे वह स्वयं पराशक्ति है, जो अकुल शिव को शक्ति प्रदान करती है तथा अंगांगिभाव में रहती है। इस कुलाकुल सम्बन्ध को तन्त्र शास्त्रों में कौल रूप मे अभिहित कहा गया है। इसके विषय में तन्त्रोक्ति इस प्रकार है :-
" कुल शक्तिरिति प्रोक्ता अकुलः शिव उच्यते। कुला कुलस्य सम्बन्धः कौल-मित्यभिधीयते ॥"
कुल शक्ति स्वरूप है, अकुल शिव स्वरूप है। इस कुलाकुल सम्बन्ध को कौल नाम से पुकारा जाता है। अर्थात् जो शिव शक्ति को एक मानते है वे कौल है। इसीलिए तन्त्रशास्त्रों मे महाशक्ति को कौलिनी या कुलयोगिनी कहा गया है जो तान्त्रिक सम्प्रदाय के अनुसार सारी सृष्टि का व्यापार करती है।
योगीजन इसी कौलिनी कुंडलिनी शक्ति को प्राणायाम द्वारा, कुंभक,

पूरक, रेचक द्वारा प्राणवायु को आरोहन अवरोहन की प्रक्रियाओं से मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर सोहम स्वरूप ब्रह्म साक्षात्कार पाते है। जो कुण्डलिनी जागरणात्मक आत्मबोध है। वास्तव में यही मानव जीवन की महान उपलब्धि है "अहं ब्रह्म" मैं अविनाशी आत्मतत्व हूँ जो सत्य है नित्य है। कुंडलिनी का
ललिता सहस्त्रनाम में इसका वर्णन इस प्रकार है
"ताडिल्लता सम रुचि षट्चक्रोपरि संस्थिता महाशक्ति कुंडलिनी बिस तन्तु तनीयसी ॥
विद्युत रेखा के समान ज्योतिर्मयी, कमल-नाल के तन्तु के समान अति सूक्ष्म षट्चक्रों को भेदने में सूक्ष्म कुंडलिनी पराशक्ति स्वरूपा है।
इसीलिए तन्त्रकारों ने कहा है।
पिण्ड ब्रह्माण्डयो: ऐक्यं नाल्पस्य तपसःफलम् ससीम को असीम से देखना अर्थात पिण्ड ब्रह्माण्ड का अभेद ज्ञान किसी महान तपस्वी को ही हो सकता है। अन्य को नहीं। इस दृष्टि से योगीजन मानवावयवों तथा श्रीचक्र के चक्रों को इस प्रकार मानते हैं।

बिन्दु — सहस्रार
कोण त्रिकोण — मस्तक
अष्टकोण — ललाट
अन्तर्दशार — भ्रूमध्य
बहिर्दशार — कण्ठ
अन्तर्दशार — हृदय
कृत रेखा

बीहर्दशार वृत्त रेखा – कुक्षि
चतुर्दशार – नाभि
अष्टदल – कटि
अष्टदल वृत्त रेखा – ऊरू युगल
षोडशदल – स्वाधिष्ठान
वृत्तत्रय – कुँडलिनी त्रिवृत्त
भूपुर – मूलाधार
भूपुर १ रेखा – जानु युगल
भूपुर २ रेखा – जंघा युगल
भूपुर ३ रेखा – पाद युगल
इस प्रकार योगी अपने देह को श्रीचक्रात्मक परिकल्पना करके शिवशक्ति का तादात्म्य प्राप्त करते हैं।

अन्त में हम स्वतः ही इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नवद्वारात्मक मानव शरीर भी श्रीचक्रात्मक है। अगस्त्य, हयग्रीव संवाद में स्पष्ट किया गया है:– स्वात्मैव देवता प्रोक्ता। ललिता विश्व विग्रह चैतन्यमयी आत्मशक्ति ही साक्षात् पराशक्ति ललिता है। जो विश्व विग्राहा होकर संसार के अणु-अणु में व्याप्त है। अतः इसमें सारे देव, सूर्यादि ग्रह, नक्षत्र, राशियाँ, दैत्य दानव, राक्षस, सिद्ध, मुनि, यक्ष, गन्धर्व, मानव, पशु, पक्षी, वृक्ष, समुद्र, नदियाँ, पर्वत, सूक्ष्म रूप में विद्यमान है।
इसीलिए परब्रह्म स्वरूपिणी महाशक्ति को विश्वरूपा कहा गया है। अर्थात् सारे विश्व में जो कुछ भी जड चेतन भाव

ह्रुं श्री

में मौजूद है। वह सूक्ष्म भाव में पराशक्ति का ही स्वरूप है, जिसका प्रतिबिम्ब श्रीचक्र है। अतः मानवमात्र को चतुर्वर्ग धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्ति के लिए सूक्ष्म या स्थूल रूप में श्रीचक्रोपासना अवश्य करनी चाहिए। सफलता अवश्य होगी।

ह्रुं श्री